21

भूतकाल, वर्तमान और भविष्य में उद्धार

(5:6-11)

अफ्रीका में मसीही बनने वाले एक व्यक्ति ने किसी प्रचारक को बताया, "जब मुझे पहली बार मसीह की मृत्यु की कहानी बताई गई थी तो मैंने यहूदा और पिलातुस, यहूदियों और सिपाहियों को गालियां दी थीं, परन्तु यह समझ आने पर कि मसीह *क्यों* मरा, मैंने *अपने आप को* कोसा, क्योंकि उसे *मेरे* पापों के कारण क्रूस पर चढ़ाया गया था।"[1] हमारे वचन पाठ में मुख्य आयत रोमियों 5:8 है: "मसीह *हमारे लिए* मरा।" "लिए" का अनुवाद *huper* से किया गया है, जिसका अर्थ "की ओर से" या "के स्थान" हो सकता है।[2] दोनों अर्थ क्रूस पर बाइबल की शिक्षा से मेल खाते हैं। इस पाठ को खत्म करने से पहले मुझे उम्मीद है कि आप यह समझ जाएंगे और दृढ़ता से कह सकते हैं कि "मसीह *मेरे* लिए मरा।"

रोमियों 5:1-11 पर आधारित यह दूसरी प्रस्तुति है, जिसमें पौलुस ने विश्वास से धर्मी ठहराए जाने से मिलने वाली आशिषें बताई हैं। पिछला पाठ उस वचन पाठ के पहले भाग पर आधारित था। यह पाठ आयत 6 से आरम्भ होकर उस वचन के अन्त तक जाएगा।

मैं इस पाठ का नाम "भूतकाल, वर्तमान और भविष्य में उद्धार" रख रहा हूं। अक्सर हम मसीही बनने के समय पिछले पापों से उद्धार पाने वालों के लिए "बचाए हुए" या उद्धार पाए हुए शब्द का इस्तेमाल करते हैं (मरकुस 16:16; देखें रोमियों 10:9)। कई बार अनन्तकाल के लिए उद्धार पाने के पूर्वानुमान में इस शब्द का इस्तेमाल किया जाता है (1 कुरिन्थियों 5:5; देखें रोमियों 13:11)। इसमें भी अर्थ है, जिसमें हम दिनप्रतिदिन उद्धार पाते हैं (1 कुरिन्थियों 1:18; 2 कुरिन्थियों 2:15)। "उद्धार" शब्द के इन तीनों इस्तेमालों को इस प्रकार संक्षिप्त किया जा सकता है:

- भूतकाल में उद्धार: पाप के दण्ड से मुक्ति।
- वर्तमान में उद्धार: पाप के व्यवहार से मुक्ति।
- भविष्य में उद्धार: (स्वर्ग में) पाप की उपस्थिति से मुक्ति।

पिछले पाठ में हमने देखा था कि पौलुस ने विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने की अतीत, वर्तमान और भविष्य की आशिषें बताई थीं। अतीत के सम्बन्ध में हमें परमेश्वर से मिलाया गया है (5:1)। वर्तमान के सम्बन्ध में हम उसके अनुग्रह में बने हुए हैं (आयत 2)। भविष्य के सम्बन्ध में, हमें उसकी महिमा में आशा है (आयत 2)। इस पाठ में हम देखेंगे कि पौलुस ने फिर से अतीत, वर्तमान और भविष्य की बात की है।

उद्धार भूतकाल (5:6-11)

भूतकाल में उद्धार हमारे वचन पाठ का मुख्य ज़ोर है: "... उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे,

... तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ ... अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जिस के द्वारा हमारा मेल हुआ है, ..." (आयतें 9-11)। हम पाप के बोझ के नीचे दबे हुए थे (देखें 3:23; 6:23क), परन्तु हमें धर्मी ठहराया गया (5:9) और परमेश्वर से मिलाया गया है (आयतें 10, 11)। यह उद्धार यीशु के द्वारा मिलता है (आयत 11)। विशेषकर यह उसके लहू के द्वारा है (आयत 9), वह लहू जो उसकी मृत्यु में बहा (आयत 10)।

यह हमें 6 से 8 आयतों में ले आता है। ये आयतें "पवित्र शास्त्र में मिलने वाले ईश्वरीय प्रेम के सबसे गम्भीर विवरणों में से एक हैं।"[3]

> क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा। किसी धर्मी जन के लिए कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।

इन वचनों का आरम्भ मसीह रहित मनुष्यजाति की आत्मिक स्थिति से होता है: "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे" (आयत 6क)। "निर्बल" शब्द का अनुवाद *asthenes* से हुआ है जो "शक्ति" के लिए शब्द (*sthenos*) के नकारात्मक पूर्वसर्ग (*a*) के साथ बनता है (देखें KJV)। इस शब्द में उसकी ओर संकेत है जो "दुर्बल ... , बीमार, अस्वस्थ" है।[4] यह "सुझाव देता है कि मनुष्य रोग ग्रस्त अर्थात पाप के रोग से कुरूप और कमज़ोर हो गया है, जो उसके जीवन को बर्बाद कर रहा है। ... उसकी बीमारी परमेश्वर की चंगा करने वाली शक्ति के बिना घातक है।"[5] एक पुरानी कहावत है, "परमेश्वर उनकी सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं" परन्तु रोमियों 5:6 कहता है कि परमेश्वर उनकी सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप *नहीं कर सकते*। बिना मसीह के लोग "असहाय," आशाहीन और खोए हुए हैं।

संसार जब असहाय स्थिति में ही था, "तो मसीह ठीक समय पर मरा" (आयत 6ख)। "ठीक समय" यूनानी भाषा में *kairos* से लिया गया है, जो समय में "निर्णायक बिन्दु" का संकेत देता है।[6] "ठीक समय" का अर्थ "परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों में सही समय" हो सकता है (देखें गलातियों 4:4),[7] या इसका अर्थ हो सकता है "वो समय जब हम सबसे असहाय थे और हमें सबसे अधिक आवश्यकता थी।" लियोन मौरिस ने सुझाव दिया है कि "ठीक समय" में दोनों विचार हो सकते हैं: "वह उस समय मरा जब हम पापी ही थे, और उस समय जो परमेश्वर के उद्देश्य से मेल खाता था।"[8]

यीशु किसके लिए मरा ? यीशु "भक्तिहीनों के लिए मरा" (रोमियों 5:6ग)। "भक्तिहीनों" बिना मसीह के हमारी आत्मिक स्थिति के वर्णन के लिए दूसरा शब्द है। अनुवादित शब्द "भक्तिहीनों" यूनानी *asebeia* से लिया गया है जो पूर्वसर्ग *a* के साथ *sebomai* शब्द को नकारात्मक बनाता है। *Sebomai* का अर्थ है "भय, भक्ति, आराधना ... में खड़े होना।"[9] इस प्रकार *asebeia* उन लोगों के लिए है, जो परमेश्वर के भय में खड़े *नहीं* होते जो उसकी भक्ति *नहीं* करते और जो उसकी आराधना करने से इनकार करते हैं। यह स्वयं परमेश्वर के व्यक्तित्व का अपमान और उसे चुनौती है।[10] हम में से कइयों को लग सकता है, "यह निश्चय ही *मेरी* बात नहीं

हो सकती!" परन्तु आयत 6 के अन्त और आयत 8 के अन्त के बीच समानता पर ध्यान दें: आयत 6 कहती है, "मसीह *भक्तिहीनों* के लिए मरा" जबकि आयत 8 कहती है, "मसीह *हमारे* लिए मरा।" "भक्तिहीनों" और "हमारे" एक ही तो बात है!

यीशु के आने से पहले मनुष्यजाति की आत्मिक स्थिति के विवरण के लिए हमारे वचन पाठ में दो और शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। आयत 8 कहती है कि "जब हम *पापी* ही थे, तभी मसीह हमारे लिए मरा" (आयत 8ख)। "पापी" शब्द *hamartia* से लिया गया है, जिसका अर्थ है "निशाना चूकना।"[11] यह शब्द इस बात की घोषणा करता है कि हम वह बनने में नाकाम रहे हैं, जो परमेश्वर हमसे बनने की आशा करता है।

चौथा शब्द आयत 10 में मिलता है: "क्योंकि *बैरी* होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ" (आयत 10क)। "बैरी" शब्द *echthros* से लिया गया है, जो "घृणा" के लिए शब्द *echthos* के परिवार का है। "*बैरी* एक मज़बूत शब्द है। ... बैरी वह व्यक्ति नहीं, जो मित्र होने से थोड़ा कम हो बल्कि इसका अर्थ विरोधी खेमे का होना है।"[12] सी.एस.लुइस ने कहा है, "हम दोषपूर्ण प्राणी ही नहीं हैं, जिन्हें सुधार की आवश्यकता है; हम ... विद्रोही हैं, जिन्हें हथियार डालना आवश्यक है।"[13] हम *असहाय* (आयत 6) बल्कि *शत्रु* थे (देखें 8:7; कुलुस्सियों 1:21)। मुझे एक घायल पशु का ध्यान आता है, जो उसकी सहायता करने की कोशिश करने वालों को काटता और पंजा मारता है।

"निर्बल," "भक्तिहीन," "पापी" और "बैरी" एक-दूसरे के पूरक शब्द नहीं लगते हैं! तौ भी परमेश्वर ने हम से प्रेम किया और हमारे लिए मरने के लिए उसने अपना पुत्र भेज दिया। मौरिस ने कहा है कि परमेश्वर "प्रेम करता है क्योंकि वह परमेश्वर है न कि इसलिए कि हम क्या हैं।"[14] जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने लिखा है, "देने वाले की नज़र में उपहार जितना महंगा होगा उतना ही लेने वाला इसके कम योग्य होगा। प्रेम जितला अधिक होगा उतना कम दिखाई देगा। इन मानकों से नापा जाए तो परमेश्वर का प्रेम सचमुच अनोखा है।"[15]

परमेश्वर के प्रेम की अद्‌भुत प्रकृति पर आयत 7 और 8 में ज़ोर दिया गया है। इन आयतों का आरम्भ होता है, "किसी धर्मी जन के लिए कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य[16] के लिए कोई मरने का भी हियाव करे" (आयत 7)। लोग समझ नहीं पाते हैं कि "धर्मी जन [*dikaios*]" और "भला मनुष्य [*agathos*]" में कोई अन्तर है या नहीं, और यदि है तो वह अन्तर क्या है। कइयों को लगता है कि इसमें कोई अन्तर नहीं है, वे यह सुझाव देते हैं कि तिरतियुस से लिखवाते हुए पौलुस ने (देखें 16:22) यह बात कही और फिर इसे स्पष्ट करने का निर्णय लिया कि "किसी धर्मी (भले) व्यक्ति के लिए मरने को तैयार व्यक्ति ढूंढ़ना कठिन होगा। ... हां, *हो सकता है* कि किसी भले (धर्मी) व्यक्ति के लिए कोई मरने को तैयार भी हो। ... परन्तु ...।"

परन्तु अधिकतर लेखकों का मानना है कि दोनों शब्दों में *कुछ* अन्तर किया जाना चाहिए। एक सम्भावना है कि "धर्मी जन" वह है जो धर्मी जीवन जीने की कोशिश करता है, परन्तु जिसे मुख्यतया पसन्द नहीं किया जाता। एक छोटी लड़की प्रार्थना करती थी, "सब बुरे लोगों को भला बना दो और सब अच्छे लोगों को कृपालु।" अफसोस कि सब "भले" लोग (पौलुस की शब्दावली का इस्तेमाल करें, तो "धर्मी" लोग) कृपालु हैं। यदि पौलुस इस प्रकार का अन्तर

चाहता था तो ''भला मनुष्य'' वही था जो ''भला'' ही नहीं, बल्कि ''कृपालु'' भी था यानी सराहनीय भी और प्रिय भी। यदि ऐसा करने के लिए कहा जाए तो हम में से अधिकतर लोग पहले के बजाय दूसरी तरह का व्यक्ति होने के लिए अपने आप को बलिदान करने को अधिक तैयार होंगे।

दोनों शब्दों में अन्तर किया जाना चाहिए या नहीं इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता। पौलुस के कहने का अर्थ दोनों तरह से एक ही है कि कुछ लोग दूसरों के लिए अपने जीवन दे देते हैं। सशस्त्र सेनाओं में पुरुष और स्त्रियां परिवार, मित्रों और देश के लिए अपने जीवन बलिदान कर देते हैं। शायद और उदाहरण ध्यान में आते हैं।[17] परन्तु आमतौर पर लोग केवल उन्हीं के लिए मरने को तैयार होते हैं, जो उनके ''प्रिय और निकट'' होते हैं।

यह हमें आयत 8 में ले आता है, ''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है'' (आयत 8क)। ''अपने प्रेम'' मानवीय प्रेम के विपरीत जो हम अपने प्रियजनों के लिए ही रखते हैं, की अपेक्षा परमेश्वर के अनोखे प्रेम को कहा गया है। परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु में उस विशेष प्रेम को दिखाया। ''*अपने* प्रेम'' के ही कारण उसने अपने पुत्र को दे दिया, परन्तु यह उससे बढ़कर है। पिता और पुत्र दोनों एक हैं (देखें यूहन्ना 10:30), इसलिए जब उनमें से एक कोई काम करता है तो वास्तव में दूसरा भी उसे कर रहा होता है। इस प्रकार अपना पुत्र देने में परमेश्वर अपने आप को दे रहा था।[18] आयत 8 में ''प्रकट करता है'' शब्द पर ध्यान दें; जहां वर्तमानकाल का इस्तेमाल इस बात पर ज़ोर देता है कि परमेश्वर अपना प्रेम दिखाने के लिए *निरन्तर* दिन-प्रतिदिन काम करता है।

हमारे प्रेम और परमेश्वर के प्रेम में सीधा अन्तर आयत के अन्तिम भाग में मिलता है, ''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, *कि जब हम पापी ही थे* तभी मसीह हमारे लिए मरा'' (आयत 8)। मसीह हमारे लिए तब नहीं मरा जब हम धर्मी थे; नहीं, हम तो ''अधर्मी'' थे (आयत 6)। वह हमारे लिए तब नहीं मरा जब हम वैसे थे जैसे हमें होना चाहिए; नहीं, हम तो ''पापी'' थे (आयत 8)। वह हमारे लिए तब नहीं मरा जब हम उसके मित्र थे; नहीं हम तो उसके ''बैरी'' थे (आयत 10)। यह अद्‌भुत है! चार्ल्स स्पर्जन ने कहा है:

> चिल्लाकर कहो या कान में; मोटे अक्षरों में लिखो या बड़ा-बड़ा छपवा लो। गम्भीरता से कहो क्योंकि यह मजाक की बात नहीं है। आनन्द से कहो क्योंकि यह शोक का विषय नहीं है। दृढ़ता से कहो क्योंकि यह पक्की बात है। दिल से कहो क्योंकि यदि मनुष्य के मन में से किसी प्रकार की कोई सच्चाई निकलनी चाहिए, वह यही है। वहां कहो जहां अधर्मी लोग रहते हैं क्योंकि यह जगह तुम्हारा अपना घर है। इसे विलासिता के अड्डों में भी कहो। [जेल] में बताओ और मर रहे व्यक्ति के पास झुककर उसके कान में धीरे से पढ़ो, ''मसीह अधर्मियों के लिए मरा।''[19]

हमारे लिए इस प्रकार प्रेम को समझना कठिन है, यदि आप मुझसे पूछें कि ''तुम अपनी पत्नी से प्रेम करते हो?'' तो मेरा उत्तर होगा, ''बेशक, करता हूं। वह दयालु और सुन्दर है। उसके खिले चेहरे पर मुस्कान है, वह मुझसे प्रेम करती है और मेरे लिए हर रोज बलिदान करती है।'' यदि मैं ऐसे उत्तर दूं तो आप समझ जाएंगे कि मैं अपनी पत्नी से प्रेम क्यों करता हूं। परन्तु यदि मैं कहूं,

''बेशक, मैं अपनी पत्नी से प्रेम करता हूं। वह कंजूस और बदसूरत है और हर वह काम करती है, जो मुझे बुरा लगे। वह मुझ से *घृणा* करती है''? तो आपको यह समझना कठिन लगेगा कि मैं उससे प्रेम क्यों करता हूं, लगेगा न? तो फिर यह कितना चकित करने वाला है कि परमेश्वर ने हमसे तब प्रेम किया जब हम अधर्मी पापी अर्थात उसके शत्रु थे।

मैं अपने आप से पूछता हूं कि यदि मैं यीशु की जगह होता तो मेरी प्रतिक्रिया क्या हो सकती थी। मैं अपने सामने साठ लाख यहूदियों और अन्य धार्मिक गुटों के सामूहिक हत्यारे अर्थात कत्लेआम के लिए ज़िम्मेदार नाजी अगुवे एडोल्फ हिटलर[20] के खड़े होने की कल्पना करता हूं। यदि मुझे अपने आप को मारने या हिटलर को मरने देने की अनुमति देने में से एक को चुनना होता तो मैं क्या करता? मेरे लिए पसन्द चुनना आसान होना था कि मैं जीवित रहना चुनता, परन्तु जब यीशु के सामने ऐसी ही चुनौती थी तो उसने मर जाना चुना (देखें यहून्ना 10:18; फिलिप्पियों 2:5-8)।

''वह हमारे लिए मरा,'' जिस कारण हमारा उद्धार हो सकता है। जैसा कि इस पाठ के परिचय में हमने देखा था, ''हमारे लिए'' का अर्थ ''हमारी ओर से'' या ''हमारे स्थान पर'' हो सकता है (देखें 1 कुरिन्थियों 15:3)। मसीह ने दोष अपने ऊपर लेकर हमारे पापों का दण्ड ले लिया; वह हमारा ''प्रायश्चित'' बन गया (रोमियों 3:25)। जिसका परिणाम यह हुआ कि जब हम यीशु में विश्वास करते और आज्ञापालन से अपने विश्वास को दिखाते हैं (देखें 1:5; 16:26) तो परमेश्वर हमारे अपराध क्षमा कर देता है (देखें 4:7) और हमें धर्मी मान लेता है (देखें 4:22-24)। यह ''भूतकाल में उद्धार'' है!

इस अद्‌भुत आत्मिक सौदे पर चर्चा करते हुए पौलुस ने ऐसे शब्द के बारे में बताया जो हमने पहले नहीं देखा था: ''मेल।'' हमारा ''मेल परमेश्वर के साथ हुआ'' है; ''हमारा मेल हुआ है'' (5:10, 11)। पौलुस ने पहले कहा था कि मसीही बनने पर हम ''धर्मी ठहरे'' थे (आयत 1); अब उसने कहा कि हमारा ''मेल'' हुआ है। ''धर्मी'' और ''मेल हुआ'' शब्दों को अलग नहीं किया जा सकता। दोनों ही परमेश्वर की सन्तान बनने की बात करते हैं, फिर भी हर किसी में उस पर अतिरिक्त ध्यान दिया गया है, जो प्रभु ने हमारे लिए किया।

अनुवादित शब्द ''मेल'' *katallasso* से लिया गया है, जिसका मूल अर्थ ''बदलना'' (*kata* के द्वारा शक्ति पाकर *allasso* [बदलना])।[21] लोगों के लिए इस्तेमाल करने पर इसका अर्थ ''शत्रुता से मित्रता में बदलना'' है।[22] इसके लिए अंग्रेज़ी शब्द ''reconcile'' में ''conciliate'' के साथ पूर्व सर्ग ''re'' (''दोबारा'') जुड़ता है। ''reconcile'' की अच्छी परिभाषा ''पुनः मित्र बनाना'' है। उन दो मित्रों पर विचार करें, जिनमें झगड़ा हो गया हो। वे कई दिनों तक एक-दूसरे के साथ बोलते नहीं हैं, यानी वे एक-दूसरे के लिए पराए हो गए फिर एक दिन उन्होंने मिल बैठकर सारे मतभेद दूर कर लिए। अब वे *फिर से मिल गए* हैं; वे एक बार फिर मित्र बन गए हैं।

''मेल'' शब्द हमारे दिमाग में इस तथ्य को लाता है कि एक समय था जब हम परमेश्वर के मित्र थे, परन्तु फिर हमने पाप किया और प्रभु से दूर चले गए। हम उससे पराए हो गए। यशायाह ने लिखा है:

> सुनो, यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया

कि उद्धार न कर सके,
न वह ऐसा बहिरा हो गया है
कि सुन न सके;
परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने
तुमको तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है,
और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुमसे छिपा है
कि वह नहीं सुनता (यशायाह 59:1, 2)।

लोगों से अपने आप को दूर परमेश्वर नहीं करता, बल्कि लोग ही पाप के द्वारा अपने आप को परमेश्वर से दूर करते हैं। कई साल पहले की बात है, एक दंपती अपनी कार में कहीं जा रहे थे। खिड़की वाली सीट के पास बैठी स्त्री ने अपने पति को देखा जो स्टेयरिंग वाली सीट के पीछे बैठा था और उसने ठण्डी सांस ली। वह कहने लगी, "जब हमारी नई-नई शादी हुई थी और जब हम कार में जाते थे तो हम *कितना* सटकर बैठते थे।" आदमी ने पत्नी की ओर देखा और कहा, "*मैं* हिलता नहीं था।" यदि आप परमेश्वर के इतना निकट नहीं हैं, जितना पहले होते थे, तो हिला परमेश्वर नहीं बल्कि आप हैं।

यह बात सच है, इसलिए लोगों से मेल करने की आवश्यकता परमेश्वर को नहीं, बल्कि लोगों को परमेश्वर से मेल करने की आवश्यकता है। पौलुस ने लिखा है, "हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप *कर लो*" (2 कुरिन्थियों 5:20ख)। हमें सुसमाचार की बात माननी आवश्यक है, जिसे "मेल-मिलाप का वचन" कहा गया है (2 कुरिन्थियों 5:19)। जब हम विश्वास करके आज्ञा मानते हैं तो परमेश्वर हमें उद्धार पाए हुओं के समूह में मिला लेता है (प्रेरितों 2:38, 41, 47)। हमें "क्रूस के द्वारा एक देह [अर्थात कलीसिया; इफिसियों 1:22, 23] बनाकर परमेश्वर से" मिलाया जाता है (इफिसियों 2:16क)।

5:11 में KJV में मेल के लिए "reconciliation" के बजाय "atonement" (प्रायश्चित) है। प्रचारक कई बार "atonement" को "at-one-ment" लिखते हैं। उनका सुझाव होता है कि इस शब्द का अर्थ है कि दो मित्र जो कभी पराये हो गए थे अब वे एक ("at one") हो गए हैं। आप इसे जैसे भी व्यक्त करें, "reconciliation" अर्थात मेल इस अद्‌भुत सच्चाई की घोषणा करता है कि यीशु मरा, इसलिए परमेश्वर के साथ *मित्रता* बहाल हो सकती है। NCV में 10 और 11 आयतों का अनुवाद इस प्रकार है: "जब हम परमेश्वर के शत्रु थे तो उसने हमें अपने पुत्र की मृत्यु के द्वारा अपने मित्र बना लिया। ... उस [यीशु] के द्वारा अब हम फिर से परमेश्वर के मित्र हैं।"

वर्तमान में उद्धार (5:9, 10)

हमें केवल पिछले पापों से ही उद्धार की आवश्यकता नहीं है बल्कि हमें दिन-प्रतिदिन आत्मिक सहायता की आवश्यकता है। हम पाप करते रहते हैं। हम आमतौर पर प्रलोभन और परीक्षाओं में पड़ जाते हैं। आज भी हमारे सामने जीवन की चुनौतियां हैं (1 यूहन्ना 1:9; 1पतरस 4:12; मत्ती 13:22)। हमारे वचन पाठ में दो बार हमें "क्यों न" वाक्यांश मिलता है (आयतें 9, 10)। परमेश्वर हमें पिछले पापों से बचाने से बढ़कर हमारे लिए "कहीं अधिक" करता है यानी

वह हर दिन हमारी सहायता करता रहता है (इब्रानियों 13:5, 6)। यह कहते हुए कि "क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे?" (आयत 10) पौलुस के मन में स्पष्टतया "वर्तमान में उद्धार" ही था।

यह कहने से कि "उसके जीवन के कारण हम उद्धार पाएंगे" पौलुस का क्या अभिप्राय था? शायद वह यीशु के पुनरुत्थान की बात कर रहा था क्योंकि यीशु जीवित है, हम जानते हैं कि परमेश्वर ने उसका बलिदान स्वीकार कर लिया है और यह कि इस कारण हमारा उद्धार हो सकता है। अध्याय 4 में पौलुस ने ज़ोर दिया कि मसीह "हमारे धर्मी ठहरने के लिए जिलाया गया" (आयत 25)। AB में हमारा वचन पाठ होगा "उसके [पुनरुत्थान] जीवन के द्वारा [पाप के कब्जे से छुड़ाए गए]" (5:10ख)।

एक और सम्भावना यह है कि पौलुस के कहने का अर्थ था कि हमारा उद्धार "उसके जीवन में भागीदारी के द्वारा" होता है (गुडस्पीड)। अध्याय 6 में पौलुस ने कहा कि "यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो ... उसके साथ जीएंगे भी" (आयत 8; देखें यूहन्ना 14:19)। पौलुस ने गलातिया के लोगों को बताया कि "अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है" (गलातियों 2:20क)।

कई लेखक 5:10 को 8:34 में पौलुस के बाद के कथन से जोड़ते हैं: "मसीह वह है जो मर गया बरन मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर की दाहिनी ओर है, और *हमारे लिए निवेदन भी करता है।*" इब्रानियों 7:25 को रोमियों 5:10 की व्याख्या माना जाता है: "इसी लिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा-पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए *विनती करने को सर्वदा जीवित है।*"

हम पौलुस की बात को कैसे भी समझें 5:10 यह घोषणा करता है कि "क्रूस पर छुटकारे का काम खत्म नहीं हुआ था, बल्कि अब भी जारी है।"[23] जब हम उसके वचन के प्रकाश में चलते हैं तो यीशु का लहू हमें लगातार हमारे पापों से धोता है (1 यूहन्ना 1:7; देखें भजन संहिता 119:105)। यीशु हमें सामर्थ देने और हमारी सहायता करने के लिए हमारे साथ रहता है (मत्ती 11:28; 28:20ख)। वह अपने पिता के सामने हमारा पक्ष रखता है (इब्रानियों 7:25; देखें 2:18; 4:14-16)। "क्योंकि वह जीवित है" नामक गीत में इसे बड़ी अच्छी तरह व्यक्त किया गया है। उसके कोरस के शब्दों का अर्थ इस प्रकार है:

> क्योंकि वह जीवित है इसलिए मैं कल का सामना कर सकता हूं,
> क्योंकि वह जीवित है इसलिए भय जाता रहा;
> क्योंकि मैं जानता हूं कि भविष्य उसी के हाथ में है,
> और जीना केवल इसलिए उपयोगी है कि क्योंकि वह जीवित है।[24]

पौलुस का तर्क था कि यदि परमेश्वर ने हमारे लिए तब इतना किया जब हम उसके *शत्रु* थे तो अब जब हम उसके *मित्र* हैं तो इससे कहीं अधिक "क्यों न" करेगा! अध्याय 8 में उसने ऐसा ही तर्क इस्तेमाल किया: "जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया: वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा?" (आयत 32)। अन्य शब्दों में यदि

परमेश्वर ने इतना अधिक किया है तो क्या वह उससे कम नहीं करेगा। पौलुस ने अध्याय 8 को इस आश्वासन के साथ समाप्त किया कि प्रभु हमेशा हमारे साथ *रहेगा,* जीवन में चाहे कुछ भी क्यों न हो जाए:

> कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नङ्गाई, या जोखिम, या तलवार? ... परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं। क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी (8:35-39)।

भविष्य में उद्धार (5:9)

वचन भूतकाल में उद्धार और वर्तमान में उद्धार की बात करता है; यह भविष्य में उद्धार की भी बात करता है। आयत 9 में हम पढ़ते हैं, "सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे।" "हम बचेंगे" भविष्यकाल में है, जिस कारण अधिकतर लोग इस बात से सहमत हैं कि इस आयत में "परमेश्वर का क्रोध" न्याय के दिन में अधार्मिकता के विरुद्ध परमेश्वर के क्रोध को कहा गया है। आयत 9 परमेश्वर के अनुग्रह के दो पहलुओं को दिखाती है। अपने अनुग्रह के कारण वह हमें वह देता है, जिसके हम योग्य *नहीं* हैं। यानी वह हमें धर्मी ठहराता है। अपने अनुग्रह के कारण वह हमें वह *नहीं* देता, जिसके हम योग्य *हैं* यानी हमें क्रोध नहीं देता।

एक बार फिर पौलुस ने जोर दिया कि "हम उसके लहू के कारण ... बचेंगे" यानी मसीह के द्वारा हमारा उद्धार होगा। हमारा उद्धार पिछले पापों से होता है, प्रतिदिन हमें बचाया जाता है और मेमने के बहुमूल्य लहू से अन्त में अनन्तकाल में बचाया जाता है! प्रकाशितवाक्य 7 परमेश्वर के सिंहासन के आसपास उद्धार पाए हुओं का मोहक दृश्य दिखाता है, जिसमें उन्होंने श्वेत वस्त्र पहने हुए हैं। आयत 14 उन्हें "अपने-अपने वस्त्र मेमने के लहू में धोकर श्वेत किए" हुओं के रूप में दिखाती है।

एक पुराने गीत के बोल हैं:

> एक बड़ा दिन आ रहा है,
> बहुत ही बड़ा दिन
> एक बड़ा दिन निकट और निकट आता जा रहा है;
> जब पवित्र लोगों और पापियों को दाहिने बाएं
> अलग किया जाएगा,
> क्या तुम उस दिन के लिए तैयार हो?
>
> एक बड़ा चमकदार दिन आ रहा है
> एक बड़ा चमकदार दिन आ रहा है,
> एक चमकदार दिन निकट आता जा रहा है;

पर इसकी चमक केवल उन्हीं पर आएगी जो
प्रभु से प्रेम करते हैं
क्या तुम उस दिन के लिए तैयार हो ?

एक दुखद दिन आ रहा है
एक दुखद दिन आ रहा है,
एक दुखद दिन निकट आता जा रहा है;
जब पापियों को उनका अन्त बता दिया जाएगा,
''दूर हो जाओ, मैं तुम्हें जानता नहीं,''
क्या तुम उस दिन के लिए तैयार हो ?[25]

न्याय का दिन आपके लिए ''चमकदार दिन'' होगा या फिर ''दुखद दिन'' ? यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपके ''वस्त्र मेमने के लहू से श्वेत'' हुए हैं या नहीं।

सारांश

पौलुस ने आनन्द की स्वाभाविक अभिव्यक्ति दिखाई, अर्थात उस आनन्द की जो प्रभु में उसे मिला था: ''और केवल यही नहीं, परन्तु ... परमेश्वर के विषय में घमण्ड [आनन्द/शेखी] भी करते हैं''[26] (आयत 11)। पौलुस का आनन्द/घमण्ड करना अपने आप में या किसी ऐसी बात में नहीं था जो उसने की हो, बल्कि परमेश्वर में था। 2 और 3 आयतों में उसने उसमें आनन्द किया जो परमेश्वर मसीही लोगों *के लिए* करता है, परन्तु उसका आनन्द केवल आशिषों तक सीमित नहीं था। उसने ''परमेश्वर में'' जो वह है और उसके व्यक्तित्व और काम में भी आनन्द किया। जब मेरी लड़कियां छोटी थीं और मैं बाहर से आता तो अक्सर उनका प्रश्न होता था, ''क्या लाए हो ?'' वे यह नहीं कहती थीं कि ''डैडी हमें आपकी बहुत याद आती थी !'' या ''आपको घर में पाकर कितना अच्छा लग रहा है !'' बल्कि ''हमारे लिए क्या लाए हो ?'' आत्मिक तौर पर कहें तो कई लोग कभी बड़े होते ही नहीं यानी वे बच्चे ही रहते हैं। उनकी मुख्य दिलचस्पी पिता में नहीं बल्कि इस बात में होती है कि स्वर्गीय पिता उनके लिए क्या कर सकता है। पौलुस ऐसा नहीं था। वह ''परमेश्वर में'' आनन्द करता था।

रोमियों 5:1-11 की चर्चा समाप्त करते हुए पौलुस ने फिर से जोर दिया कि हमारे वचन पाठ की सब आशिषें ''अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हैं, जिस के द्वारा हमारा मेल हुआ है'' (आयत 11क)। चार साल की एक लड़की ने प्रचारक को उन लोगों के बारे में बताते सुना था जो ''खोए हुए'' थे। एक दिन उस लड़की ने प्रार्थना की कि ''हे परमेश्वर उन लोगों की जो खो गए हैं घर का रास्ता ढूंढ़ने में सहायता कर, ताकि वे फिर कभी न खोएं।''[27] कइयों को ''घर को आने का रास्ता पता होना'' आवश्यक है, परन्तु उन्हें जो जानने की आवश्यकता है वह गली का पता नहीं बल्कि यीशु मसीह है। केवल उसी के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारा मेल हो सकता है !

इस पाठ में हमने भूतकाल में उद्धार, वर्तमान और भविष्य में उद्धार की बात की है। समाप्ति में हम अपने जीवन की समीक्षा करें। क्या आपने विश्वास से बपतिस्मा लेकर अपने पापों के धोए जाने से भूतकाल में उद्धार का अनुभव किया है (प्रेरितों 22:16) ? क्या आप परमेश्वर के वचन के

प्रकाश में चलते हुए वर्तमान में उद्धार का आनन्द ले रहे हैं कि लहू निरन्तर आपके मन को शुद्ध करता रहे (1 यूहन्ना 1:7, 9)। यदि हां तो आप भविष्य में उद्धार की आशा में रह सकते हैं। जब आप मेमने के लहू में श्वेत किए गए वस्त्र पहनकर परमेश्वर के सिंहासन के गिर्द इकट्ठे होंगे। (प्रकाशितवाक्य 7:14)। यदि आपको वह आशा नहीं है तो मेरी प्रार्थना है कि आप आज ही प्रभु के पास (या वापस घर) आ जाएं। याद रखें, मसीह *आप* के लिए मरा!

टिप्पणियां

[1]डेविड एफ. बर्गेस, संक., *इन्साइक्लोपीडिया आफ़ सरमन इलस्ट्रेशंस* (सेंट लुइसः कनकोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1988), 95 से लिया गया। [2]लियोन मौरिस, *द एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 222. एन. 20. [3]जेम्स आर. एडवर्ड्स, *रोमन्स,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मेसाचुएट्सः हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1992) 139. [4]*द एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन सैम्युअल बैग्स्टर एंड सन्स, 1971), 55. [5]रिचर्ड ए. बैटे, *ए लैटर आफ़ पॉल टू द रोमन्स,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री (ऑस्टिन, टैक्ससः आर. बी. स्वीट कं., 1969), 67–68. [6]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, थियोलॉजिकल *डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट,* संपा. गरहर्ड किट्टल एंड गरहर्ड फ्रेडरिच, अनुवाद ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *abr.* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 389 में जी. डेलिंग, *''kairós.''* ''समय'' के लिए एक और शब्द (*chronos,* ''chronology'' जैसे शब्दों में इस्तेमाल किया जाने वाला) समय के काल से सम्बन्धित है। [7]जिम्मी ऐलन, *सर्वे आफ़ रोमन्स,* चौथा संस्क., संशो. (सरसी, आर्कैंसाः लेखक द्वारा, 1973), 63 में इस समय पर चर्चा की गई है। [8]मौरिस, 222. [9]*द अनैलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन,* 55, 364. [10]डब्ल्यू. ई. वाईन, मेरिल एफ़. अंगर, एंड विलियम व्हाईट,जूनियर, *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी आफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामैंट वर्ड्स* (नैशविल्लेः थॉमस नैल्सन पब्लिशर्स, 1985), 651.

[11]वही, 576. [12]मौरिस, 225. [13]सी. एस. लुइस, *द प्रॉब्लम आफ़पेन* (आक्सफोर्डः पृष्ठ नहीं, 1940; रिप्रिन्ट, न्यू यार्कः मैक्मिलन पब्लिशिंग कं., 1962), 91. लुइस ऑक्सफोर्ड का अग्नॉस्टिक था जो बाद में परमेश्वर में विश्वास करने वाला बन गया। [14]मौरिस, 224. [15]जॉन आर. डब्लयू. सटॉट, *द मैसेज आफ़ रोमन्सः गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ार द वर्ल्ड,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इंटरवर्सिटी प्रैस, 1994), 144. [16]यूनानी में ''भला मनुष्य'' वाक्यांश में ''मनुष्य'' के लिए कोई शब्द नहीं है। इस वाक्यांश का अर्थ ''अच्छी वस्तु'' हो सकता है। बार्कले के अनुवाद में ''अच्छा करना'' है। [17]शायद ऐसा उदाहरण जोड़ें जिससे आपके सुनने वाले परिचित हों। अमेरिकी श्रोताओं के लिए अच्छा उदाहरण एक व्यक्ति का हो सकता है, जिसने जनवरी 1982 को वाशिंगटन डीसी में एयर फलोरिडा की उड़ान 90 के क्रैश के बाद दूसरों को बचाने में सहायता की। उसने दूसरों को बचाया, परन्तु स्वयं डूब गया। (बरगेस, 34.) [18]स्टॉट, 144. [19]जोसफ एस. एक्सल, *दि बिब्लिकल इलस्ट्रेटर* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः बेकर बुक हाउस, 1973), 364 में उद्धृत चार्ल्स एच. स्पर्जन। [20]आप आधुनिक आतंकवादी का नाम बता सकते हैं, जिससे आपके सुनने वाले परिचित हों।

[21]*दि एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन,* 16, 217. [22]वाइन, 513–14. [23]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्ससः स्वीट पब्लिशिंग कं., 1965), 38. [24]विलियम जे. एण्ड गलोरिया गेदर, ''बिकॉस ही लिवस,'' *सौंग्स ऑफ़ फ़ेथ एण्ड प्रेज़,* संक. एण्ड संपा. आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुईसियानाः हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994). [25]विल एल.थॉम्पसन, ''देअर'स ए ग्रेट डे कमिंग,'' *क्रिश्चियन हिम्स III,* संपा., एल. ओ. सेंडरसन (नैशविल्लेः गॉस्पल एडवोकेट कं., 1966)। [26]2:17 में पौलुस ने कहा कि यहूदी लोग परमेश्वर में गर्व करते हैं, परन्तु वे परमेश्वर में उतना गर्व नहीं करते थे जितना इस तथ्य में कि परमेश्वर ने उनकी कौम को अपने विशेष लोग होने के लिए चुन लिया था। परमेश्वर में उनका गर्व (आनंद/घमण्ड) करना आत्म–केन्द्रित था, जबकि पौलुस का परमेश्वर–केन्द्रित था। [27]ईस्ट साइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी ओक्लाहोमा, 4 जनवरी 2004 में दिया गया डेल हार्टमैन का प्रवचन।